नियमित स्कूलों में विकलांग बच्चे

पल्लवी दत्ता

अपनी सात साल की उम्र के हिसाब से कहीं अधिक परिपक्व नेहा, भोपाल के एक अग्रणी स्कूल में दूसरी कक्षा की छात्रा है। अपने शिक्षकों की चहेती, वह अपने साथियों के बीच एक लीडर है। नेहा ख़ुद अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन कर रही है, साथ ही उसे अपने सहपाठियों के असाइनमेंट में उनकी मदद करना भी अच्छा लगता है। वह जीवन से इतनी भरपूर है कि कोई भी आसानी से यह भूल सकता है कि वह दृष्टिहीन है और उसकी पाठ्यपुस्तकें छपी हुई नहीं बल्कि ब्रेललिपि में हैं।

चार साल की उम्र तक नेहा को कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। उसके माता-पिता ने उसे घर पर ही शिक्षा प्रदान करने की कोशिश की थी। क्योंकि उनके घर के आस-पास मौजूद अधिकांश स्कूलों में विकलांग विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ज़रूरी साधन नहीं थे। वे अपनी बच्ची के बारे में चिन्तित भी थे - वह एक नियमित (मुख्यधारा के) स्कूल में ख़ुद को कैसे ढाल पाएगी। वह अपने अधिकांश सहपाठियों की तुलना में काफ़ी बड़ी होगी, इसलिए क्या उसे अलग-थलग कर दिया जाएगा या इससे भी बदतर, क्या उसे बहिष्कृत कर दिया जाएगा। तभी नेहा के माता-पिता को पहली बार 'आरुषि'के बारे में पता चला, जो कि शारीरिक और बौद्धिक विकलांगताओं से प्रभावित बच्चों और वयस्कों के लिए काम करने वाली एक ग़ैर-लाभकारी संस्था है,और वे उसे वहाँ लेकर आए।

अपने बुनियादी नज़रिए के हिस्से के रूप में, 'आरुषि' विकलांग बच्चों और लोगों को ऐसे वातावरण से बाहर ले जाना चाहती है जो 'विशेष आवश्यकताओं' को पूरा करता है। 'आरुषि' उनमें ऐसे जीवन कौशल विकसित कर उन्हें सशक्त बनाती है जो उन्हें समाज की 'मुख्यधारा' में सम्मिलित होने में सक्षम बनाते हैं।

विशेष विद्यालय क्यों और कब आवश्यक होते हैं?

हालाँकि दो से छह साल की उम्र के विकलांग बच्चे नियमित स्कूलों में भर्ती के पात्र होते हैं, लेकिन उन्हें नियमित स्कूल भेजने का निर्णय व्यक्तिपरक होता है और बच्चे की विकलांगता की प्रकृति और गम्भीरता पर आधारित होता है। इस आयु वर्ग के हल्की या मध्यम विकलांगता वाले बच्चों की नियमित स्कूलों में भलीभाँति सम्मिलित होने की बेहतर सम्भावना होती है।

जिन बच्चों को देखने या सुनने सम्बन्धी विकलांगताएँ होती हैं, वे किसी भी उम्र में नियमित स्कूल जा सकते हैं, क्योंकि उनकी विकलांगताएँ विशुद्ध रूप से शारीरिक होती हैं न कि बौद्धिक प्रकृति की। डाउन सिंड्रोम, ऑटिज़्म और अन्य बौद्धिक विकलांगताओं से प्रभावित बच्चे, जिनके विकास के पड़ावों में देरी होती है, वे भी नियमित स्कूलों में जा सकते हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले उन्हें स्कूल की तैयारी के लिए सहायता और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

जब विकलांग बच्चे मुख्यधारा के स्कूल में पढ़ते हैं, तो उनके और बाक़ी बच्चों के बीच होने वाले संवाद ग़ैर-विकलांग बच्चों के बीच विकलांगों के प्रबल समर्थक और हिमायती तैयार कर सकते हैं। ग़ैर-विकलांग बच्चों में विकलांग बच्चों की ज़रूरतों और क्षमताओं के बारे में अपेक्षाकृत पहले जागरूकता विकसित हो जाती है, जिससे न केवल विकलांग लोगों के लिए समाज में एक यथोचित स्थान बनाने में बल्कि एक सहानुभूतिपूर्ण, न्यायसंगत और समतामूलक समाज के निर्माण में भी बहुत मदद मिलती है।

विकलांग बच्चे की देखभाल का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा प्रारम्भिक हस्तक्षेप होता है। प्रारम्भिक वर्षों में माता-पिता और शिक्षकों को विकास सम्बन्धी विलम्ब के बारे में सावधान रहने की ज़रूरत होती है। यदि बच्चा विकास का कोई पड़ाव चूक जाता है या उसमें देरी हो जाती है, तो पहले किसी बाल रोग विशेषज्ञ से परामर्श लिया जाना चाहिए और उसकी सलाह पर बच्चे को ऐसे किसी संगठन और स्कूल में भेजा जा सकता है जो उसकी आवश्यकताएँ पूरी करता हो। ऐसे स्थान पर, काउंसलर और मनोवैज्ञानिक उस कठिनाई को समझने के लिए निदान परीक्षणों जैसे तरीक़ों का इस्तेमाल करते हैं जिसका सामना सम्भवतः बच्चा करता है और वे आवश्यक हस्तक्षेपों के लिए एक योजना बनाते हैं। जो देखभालकर्ता बच्चों के प्रति अतिसंरक्षण की प्रवृत्ति रखते हैं या इस तथ्य से इन्कार करते हैं कि उनके बच्चे को किसी क़िस्म की विकलांगता है, वे उस प्रक्रिया में बाधा डालते हैं जिसके माध्यम से बच्चा स्वतंत्रता और अपने जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए उपयुक्त उपचार और सहायता प्राप्त कर सकता है।

स्कूल की तैयारी का कार्यक्रम

'आरुषि' के विशेष शिक्षकों ने नेहा को ब्रेल पढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया, जबकि ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट ने उसे दैनिक जीवन के अन्य कौशलों, जैसे गतिशीलता में मदद की। उन्होंने उसे ब्रेल पढ़ने में सक्षम बनाने के लिए मौखिक और संवेदी अभ्यासों के साथ शुरुआत की। इसके साथ ही, उन्होंने उसकी क्षमता और मुख्यधारा की शिक्षा के लिए उसकी तैयारी का आकलन किया। उन्हें यह तय करने में लगभग छह महीने लगे कि नेहा न केवल एक नियमित स्कूल में सफलतापूर्वक सम्मिलित हो सकती है, बल्कि वह वहाँ उन्नति भी करेगी।

'आरुषि' में, पाँच साल से कम उम्र के उन विकलांग बच्चों के लिए, जो नियमित स्कूलों में नामांकित नहीं हैं, स्कूल की तैयारी के लिए 'कोशिश' नामक एक कार्यक्रम संचालित किया जाता है। यहाँ, सेरेब्रल पाल्सी, अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों और अन्य शारीरिक विकलांगताओं और विकास सम्बन्धी विलम्ब से प्रभावित बच्चों को स्कूल की तैयारी के बुनियादी कौशलों से लैस किया जाता है, ताकि उन्हें जल्द-से-जल्द नियमित स्कूलों में प्रवेश दिलाया जा सके। उनकी विकलांगता की प्रकृति और कारण निर्धारित करने के लिए मूल्यांकन किया जाता है, जिसके बाद उनकी चिकित्सा के लिए एक विस्तृत योजना तैयार की जाती है। समन्वय, नेत्र सम्पर्क, एकाग्रता अवधि में सुधार करने, लम्बे समय तक बैठने और नियत कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता विकसित करने के लिए बौद्धिक रूप से विकलांग बच्चों को ऑक्यूपेशनल थेरेपी प्रदान की जाती है ताकि वे नियमित कक्षा में ढल सकें।

जिन बच्चों में बोलने सम्बन्धी विकार होता है उन्हें वाक् चिकित्सा (स्पीच थेरेपी) दी जाती है। प्रशिक्षक यह निर्धारित करते हैं कि क्या बच्चे को सुनने सम्बन्धी विकार भी है। यदि हाँ, तो वे हियरिंग एड (श्रवण यंत्र) की आवश्यकता और प्रभावशीलता के बारे में निर्णय लेते हैं। यदि वे यह पाते हैं कि बच्चा सहायक उपकरण के बिना सुन सकता है लेकिन फिर भी बोल नहीं रहा है, तो स्पीच थेरेपिस्ट ऐसे बच्चे की सहायता के लिए वैकल्पिक साधनों का उपयोग करते हैं। ये उपचार लम्बे समय तक चलते हैं और एक बच्चे के नियमित स्कूल में सम्मिलित हो जाने के बाद भी जारी रहते हैं।

प्ले-वे (खेल का तरीक़ा) का उपयोग करते हुए, विशेष शिक्षक बच्चों को श्रवण, दृश्य और स्पर्श सम्बन्धी प्रेरणाओं से परिचित कराते हैं। सीखने के लिए बच्चे की तत्परता और उसकी भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं जैसे कारकों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए शिक्षक बच्चों को उन कौशलों और साधनों से लैस करने के लिए अनेक रणनीतियाँ अपनाते हैं जिनकी आवश्यकता उन्हें अपने 'विशेष' स्थानों के संकीर्ण दायरे से परे स्थित दुनिया में विकास करने के लिए और बड़े होकर स्वतंत्र रूप से जीने व काम करने के लिए होती है।

नेहा का प्रशिक्षण तो ब्रेल, संवेदी और गतिशीलता सम्बन्धी अभ्यासों पर केन्द्रित था, पर 'आरुषि' द्वारा प्रत्येक बच्चे के लिए ऐसी रणनीति तैयार की जाती है और उसे ऐसी चिकित्साएँ प्रदान की जाती हैं जो उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए, डाउन सिंड्रोम से प्रभावित बच्चों की न केवल शारीरिक सीमाएँ होती हैं, बल्कि वे विकासात्मक और सामाजिक चुनौतियों का भी सामना करते हैं और अक्सर स्पष्ट रूप से बोलने में भी संघर्ष करते हैं। उनके लिए तैयार की जाने वाली प्रक्रिया में अकादमिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ स्पीच थेरेपी, नेत्र सम्पर्क बनाना और सामाजिक कौशल निखारना शामिल होता है। उनके सामाजीकरण का कौशल एक अन्य विकासात्मक क्षेत्र है जिस पर 'कोशिश' में प्रशिक्षक ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस प्रशिक्षण के बिना, ये बच्चे मिश्रित कक्षा में भलीभाँति समायोजित नहीं हो सकते।

देखभालकर्ता की काउंसलिंग

नेहा को नियमित स्कूल भेजने के बारे में उसके माता-पिता को जो आशंकाएँ थी उनके बारे में उन्हें काउंसलिंग प्रदान की गई। काउंसलरों ने उन्हें समझाया कि नेत्रहीनों के लिए स्कूल, भले ही अच्छे इरादे से और सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित किए जाते हैं, लेकिन वे नेहा की शिक्षा और अनुभवों को सीमित कर देंगे। ग़ैर-विकलांग बच्चों का साथ और उनका व्यवहार सम्बन्धी प्रभाव नेहा के विकास में एक उत्प्रेरक का काम करेगा। यह भी समझाया गया कि यह बच्चे का अधिकार है कि उसे अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए वह सभी अवसर मिलें जो ग़ैर-विकलांग बच्चों को मिलते हैं। 'आरुषि' यह सुनिश्चित करने के लिए भी माता-पिता की काउंसलिंग करती है कि बच्चों को घर पर भी सशक्तिकरण का उसी तरह का अनुभव मिले जैसा उन्हें स्कूल में मिलता है।

स्कूल में प्रवेश और उसके बाद

ब्रेल और ऑक्यूपेशनल थेरेपी में कौशल प्रशिक्षण के साथ-साथ, नेहा को पूर्वस्कूली पाठ्यचर्या की शिक्षा भी दी गई, इसलिए वह इस लिहाज़ से भी अपने साथियों जितनी प्रगति कर चुकी थी। नेहा, उसके माता-पिता और उसके शिक्षकों द्वारा की गई सारी मेहनत का नतीजा यह हुआ कि नेहा ने 2021 में एक सरकारी स्कूल में सीधे कक्षा-1 में प्रवेश पा लिया, जो उस समय छह साल की हो चुकी इस बच्ची के लिए उपयुक्त था।

नेहा अभी भी स्कूल से लौटने के बाद 'आरुषि' जाती है, जहाँ

उसे अपनी ज़रूरत के अनुसार अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता और स्कूली जीवन के अन्य पहलुओं और अपने पाठ्येतर विकास में मदद मिलती है। नाटक, संगीत, नृत्य, योग और क्राफ्ट विकलांग बच्चों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उनके समग्र विकास के लिए ज़रूरी वातावरण प्रदान करने हेतु 'आरुषि' इन सभी साधनों का उपयोग करती है। व्यक्तित्व के विकास में नाटक की अहम भूमिका होती है। काग़ज़ काटने, मोड़ने और चिपकाने से आँखों और हाथों का आपसी समन्वय और सूक्ष्म पेशीय कौशल बेहतर होते हैं, ख़ासकर ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम वाले बच्चों के लिए।

शिक्षकों के साथ कार्य

एक विकलांग बच्चे की अपने ग़ैर-विकलांग साथियों के साथ पढ़ने और बढ़ने की इस पूरी यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका स्कूलों में शिक्षकों द्वारा निभाई जाती है और नियमित स्कूल प्रणाली में इन बच्चों की सफलता बहुत कुछ उन पर निर्भर करती है। इसलिए, यह महत्त्वपूर्ण है कि ये शिक्षक विकलांग बच्चों के नियमित स्कूलों में पढ़ने से सम्बन्धित आवश्यकता को समझें और हर सम्भव तरीक़े से इसमें सहायता करें। इसके अलावा, मुख्यधारा के स्कूलों द्वारा विकलांग विद्यार्थियों को प्रवेश देने से मना करने का जो मुख्य कारण बताया जाता है वह

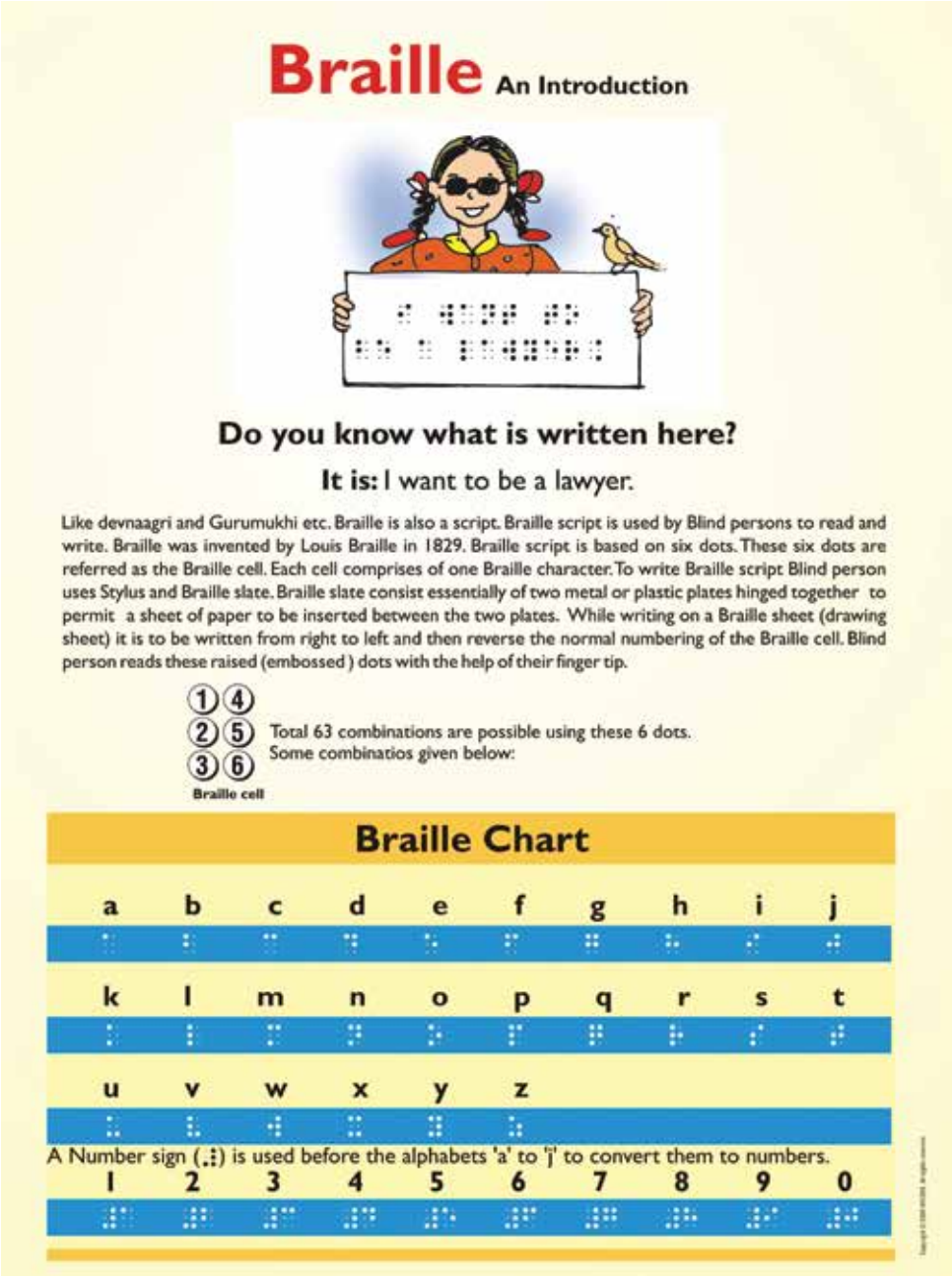

चित्र-1 : ब्रेल को समझना, जो कि एक शिक्षण सहायक सामग्री है।

है प्रशिक्षित स्टाफ़ की कमी। इसे दूर करने के लिए, 'आरुषि' स्कूल शिक्षकों और प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती है जो विकलांगताओं से जुड़े मिथकों और ग़लत धारणाओं को दूर करने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और विकलांग बच्चों के मुख्यधारा के स्कूलों में पढ़ने के महत्त्व पर ज़ोर देते है।

'आरुषि' द्वारा उन्मुखीकरण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिनमें शिक्षक अपने कक्षा के अनुभव विशेषज्ञों के साथ साझा करते हैं जो विकलांग बच्चों की ज़रूरतें समझने में उनकी मदद करते हैं। शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों, शिक्षाशास्त्र और रणनीतियों से परिचित कराया जाता है जिन्हें वे उन कक्षाओं में इस्तेमाल कर सकते हैं जिनमें विकलांग बच्चे होते हैं। शिक्षक बच्चों द्वारा अनुभव की जाने वाली सीखने सम्बन्धी और अन्य कठिनाइयों की पहचान करने और उनका आकलन करने के तरीक़े भी सीखते हैं। बीते वर्षों में, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में सरकारी स्कूलों के तीन लाख से अधिक शिक्षकों ने इन उन्मुखीकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है।

चित्र-2 : उन शिक्षकों के लिए कुछ सरल सुझाव जिनकी कक्षाओं में विकलांग बच्चे हैं।

स्कूलों में शिक्षकों को उनके काम में सहायता प्रदान करने के लिए 'आरुषि' उन्हें शिक्षण सहायक सामग्री प्रदान करती है, जैसे कि ब्रेल और संकेत भाषा में सम्बन्धित प्रतीकों के साथ देवनागरी और अँग्रेज़ी वर्णमाला के चार्ट। 'आरुषि' ने दृष्टि सम्बन्धी विकलांगताओं से प्रभावित बच्चों को ब्रेल और गणित पढ़ाने और सुनने में कठिनाई झेलने वाले बच्चों को सांकेतिक भाषा सिखाने के बारे में वीडियो ट्यूटोरियल भी तैयार किए हैं।

उन शिक्षकों के लिए सामान्य सुझाव जिनकी कक्षाओं में विकलांग बच्चे हैं

- एक दोस्ताना व्यवस्था की शुरुआत करें और विकलांग बच्चों को ऐसे अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठाएँ जो उनकी सहायता करने की इच्छा रखते हैं और सहायता करने में सक्षम हैं।
- इन बच्चों के साथियों को उनके लिए लिखने वालों, नोट लेने वालों और पढ़ने वालों के रूप में स्वेच्छा से काम करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- पाठ, परीक्षाओं और नियत कार्यों में अधिक समय की अनुमति दें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशों को दोहराएँ कि निर्देश और प्रश्न भलीभाँति समझ लिए गए हैं।

जब दृष्टिबाधित बच्चा कक्षा में होता है :

- स्पर्श (स्पर्श संवेदन) के माध्यम से शिक्षण को अधिकतम सीमा तक बढ़ाएँ।
- जहाँ सम्भव हो चित्रों की बजाय त्रिआयामी (3D) मॉडलों का उपयोग करें।
- यदि मॉडल उपलब्ध नहीं हैं तो चित्रों का वर्णन करें।
- इशारों या हाव-भाव की बजाय आवाज़ के द्वारा निर्देश और संकेत दें।
- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को कक्षा में सामने बैठाएँ।

जब सुनने में कठिनाई वाला बच्चा कक्षा में हो :

- दृश्य साधनों के माध्यम से शिक्षण को अधिकतम सीमा तक बढ़ाएँ।
- दिए गए किसी भी निर्देश के लिए लिखित प्रतियाँ और दृश्य सहायता सामग्री प्रदान करें।
- कक्षा में उपयोग किए जाने वाले किसी भी वीडियो में नीचे आने वाले कैप्शन चालू करें।
- उन्हें कक्षा में सामने बैठाएँ ताकि वे आसानी से लिप-रीडिंग कर सकें।

सारांश

'आरुषि' ने 500 से अधिक बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने में मदद की है। इन सफलता की कहानियों में से प्रत्येक के पीछे एक स्कूल शिक्षक है जो अपनी कक्षा के प्रत्येक बच्चे को सफल होने में मदद करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने के लिए तैयार था। आवश्यक विशेष उपायों से अवगत, इन शिक्षकों ने विद्यार्थियों की यात्रा में उन तरीक़ों से सहायता की जो बच्चों के साथ उनके द्वारा किए जाने वाले सामान्य कार्य से भिन्न हो सकते हैं। ऐसा प्रत्येक शिक्षक विकलांग बच्चों के लिए जगह बनाने में एक उत्प्रेरक होता है जिससे कि ये बच्चे नियमित स्कूलों में समृद्ध जीवन जी सकते हैं और फलस्वरूप उन्हें समाज में उनका यथोचित स्थान मिल सकता है।

* बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

पल्लवी दत्ता भोपाल में रहने वाली एक कंटेंट लेखिका हैं। शिक्षा से एक सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ, पल्लवी वर्तमान में तकनीक और कहानी सुनाने की कला पर लिखती हैं। पल्लवी 'आरुषि' में स्वैच्छिक सेवा प्रदान करती हैं और वे उन आवाज़ों में से एक होने की उम्मीद करती हैं जो अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाती हैं। उनसे *pallaveedutta@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय